संपादकीय

गतिविधि आधारित शिक्षा : सीमाओं का अंकन

हमारी खस्ताहाल शिक्षा व्यवस्था में, जिसकी आलोचना आए दिन अनेक आधारों पर होती रहती है, स्कूलों में सीखने की गुणवत्ता की बैचेनी इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि पिछले दो दशकों में इसने शैक्षिक विमर्श में विभिन्न प्रकार के विचारों को जन्म दिया है। बच्चों के कम सीखने का दबाव पिछले दशकों में इतना गहरा गया है कि बहुत से अविचारित प्रयासों को भी आजमाने का जोखिम हमारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था में उठाया गया है। जब बीमार का हाल अच्छा नहीं हो और डॉक्टर जवाब दे चुके हों तो, घर वाले टोने-टोटकों को हितकर मान आजमाने से नहीं चूकते। जहां जरूरत इस बात की हो कि बच्चों के कम सीखने की समस्या के कारणों का गहराई से विश्लेषण किया जाए और चुनौतियों को ज्यादा तैयारी के साथ संबोधित किया जाए वहां बजाए इसके, आनन-फानन में ऐसे प्रयास और कार्यवाहियां नजर आती हैं जो कि शैक्षिक सुधारों को बहुत दूर तक ले जाने में सक्षम प्रतीत नहीं होतीं। सामयिक चुनौतियों के दबाव में घुसपैठ कर जाने वाले कुछ विचारों को शैक्षिक विमर्श में इतने हल्के तरीके से लिया जाता है कि चुनौतियों की तात्कालिकता में बिना पूरी छानबीन के ही स्कूलों में कार्य करने की इजाजत उन्हें मिल जाती है और उनकी शैक्षिक उपयुक्तता को जांच-पड़ताल की कसौटियों पर कसकर नहीं देखा जाता। वर्तमान में शिक्षा में हो रहे बहुत से प्रयोगों या कार्यवाहियों को देखकर ऐसा ही भान होता है। इन प्रयोगों या कार्यवाहियों के पीछे एक लच्छेदार शब्दावली होती है जो कि सुनने में मोहक और नयेपन का अहसास लिए होती है और इसीलिए इन्हें शिक्षा में प्रगतिशील कदम मानकर स्वीकार कर लिया जाता है। लेकिन इन विचारों ने शिक्षा व्यवस्था में क्या जोड़ा या क्या बर्बाद किया इसका भी लेखा-जोखा नहीं रखा जाता। हमें लगता है कि शैक्षिक विमर्श में किसी भी शब्दावली और विचार के चलन की जांच-पड़ताल शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्रीय कसौटियों पर होनी चाहिए।

दरअसल हमारी वर्तमान स्कूली शिक्षा व्यवस्था की आलोचना विभिन्न आधारों पर की जाती है कि वहां सीखने की प्रक्रिया शिक्षक केन्द्रित होती है, शिक्षण में बमुश्किल पाठ्यपुस्तकों से इतर किसी प्रकार की गतिविधि या सहायक शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है, सीखने में बच्चों की सक्रिय भागीदारी के बजाए व्याख्यान पद्धति और रटन्त विद्या का दबदबा रहता है। यह धारणा भी गहरे बैठी होती है कि शिक्षक सब कुछ जानता है और बच्चे कुछ नहीं जानते और शिक्षक का कार्य बच्चों को ज्ञान देना है, शिक्षण में बच्चों के सीखने के विभिन्न स्तरों को बिना ध्यान में रखे एक ही स्तर पर सीखने के लिए धकेला जाता है, बच्चों के अनुभव और ज्ञान को न के बराबर महत्त्व दिया जाता है, शिक्षक-बालक संबंधों में जकड़बंदी होती है जिससे कि बच्चे अपनी जिज्ञासा को भी शिक्षकों के समक्ष नहीं रख पाते हैं, 'सीखने' के बजाए 'पढ़ाने' पर जोर दिया जाता है, मूल्यांकन तयशुदा विषयों का और परंपरागत तरीके से ही होता है, बच्चों के लिए परस्पर अन्तःक्रिया से सीखने के अवसर नहीं होते, पाठ्यक्रम पूरा कराने पर अत्यधिक जोर होता है और कक्षा-कक्ष का बंधा-बंधाया माहौल आदि ऐसी समस्याएं हैं जो कि बच्चों के सीखने को बाधित करती हैं।

इन्हीं समस्याओं के चलते पिछले लगभग दो दशकों में भारतीय शैक्षिक विमर्श में खास तरह की शब्दावली ने अपनी पैठ बनाई है और व्यापक स्तर पर सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया है। इनमें से कुछ बहु-प्रचलित हैं-आनन्ददायी शिक्षा, खेल-खेल में शिक्षा, न्यूनतम अधिगम स्तर, दक्षता आधारित शिक्षा और गतिविधि आधारित शिक्षा। जब इस तरह की शब्दावली या विचार शिक्षा में घुसपैठ करते हैं तो इसके आधार पर पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री और शिक्षक प्रशिक्षण की योजनाएं बनती हैं और उन्हें जमीन पर उतारा जाता है। जमीनी स्तर पर इनका क्या हश्र होता है यह अपने आपमें दिलचस्प पड़ताल का विषय हो सकता है लेकिन वैचारिक रूप से इनकी जड़ें कितनी गहरी हैं, यह भी पड़ताल का विषय है। वर्तमान में कई प्रदेशों में गतिविधि आधारित शिक्षा को खास तवज्जो मिल रही है। तमिलनाडु इसकी अगुवाई कर रहा है और इनके अनुभवों से सीखकर कुछ बड़ी स्वंयसेवी संस्थाएं सरकार की मदद से इसे अन्य प्रदेशों के स्कूलों में लागू करवाने का प्रयास

कर रही हैं। इसके लिए सामग्री का निर्माण किया जा रहा है और प्रयोग के तौर पर कुछ स्कूलों में लागू करने की तैयारी की जा रही है।

शिक्षण के परंपरागत तरीकों के बरक्स गतिविधि आधारित शिक्षा के पक्ष में एक मोहक शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है जो कि सुनने में आधुनिक शिक्षा चिन्तन के करीब लगती है और यह उम्मीद की जा रही है कि शिक्षा व्यवस्था की जड़ता को संबोधित किया जा सकेगा। इसके पक्ष में तर्क हैं और इसके पैरवीकारों का मानना है कि बच्चे खुद करके, अपने अनुभवों से, जल्दी सीखते हैं (यह ऐसा सिद्धान्त है जिसे शिक्षा जगत में निर्विवाद मान्यता प्राप्त है)। इसलिए गतिविधि आधारित शिक्षा को जायज ठहराने के लिए परंपरागत स्कूली शिक्षा व्यवस्था के उलट तर्क दिए जा रहे हैं कि-गतिविधि आधारित शिक्षा बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता देती है, इसमें बच्चों को खुद सीखने के अवसर ज्यादा मिलते हैं। फलतः शिक्षण में शिक्षक केन्द्रितता का स्थान कम हो जाता है। इससे समूह में सीखने और बच्चों के परस्पर अन्तःक्रिया से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है। सीखने के प्रत्येक चरण में बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होती है। क्योंकि बच्चे खुद करके देखेंगे इसलिए रटन्त विद्या से मुक्ति मिल पाएगी। सीखने की उपलब्धि के अहसास से बच्चे आगे सीखने के लिए प्रेरित होंगे। इसमें बच्चों के स्तर के अनुसार कार्य संभव होता है और कोई भी बच्चा पूर्व के चरणों पर काम किए बिना आगे नहीं बढ़ पाएगा। मूल्यांकन के तरीके सिखाने के चरणों में ही समाहित होते हैं। गतिविधियां बच्चों में सीखने का आनन्द उत्पन्न कर सकेंगी। शिक्षक-बालक संबंधों में भी नजदीकी आएगी क्योंकि शिक्षक सीखने में सहायक की भूमिका में होगा। कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएं बच्चों की जरूरत और रुचि के आधार पर तय की जा सकेंगी।

यदि एक बार के लिए गतिविधि आधारित शिक्षा को छोड़ दें तो किसी भी प्रभावी स्कूली शिक्षा में ये तत्व होने चाहिएं। क्योंकि अब ये तर्क गतिविधि आधारित शिक्षा के पक्ष में दिए जा रहे हैं अतः पहली नजर में गतिविधि आधारित शिक्षा भी निर्विवाद ही मालूम पड़ती है और परंपरागत शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों के लिए कारगर तरीका भी नजर आती है। हमारा मानना है कि किसी भी शिक्षा प्रणाली में बच्चों के सीखने को प्रभावित करने वाले इन कारकों का समावेश होना चाहिए और इससे निश्चित ही शिक्षा प्रक्रियाओं में गुणात्मक परिवर्तन आएंगे। संभवतः यही वे कारक हैं जो किसी शिक्षा प्रणाली को प्रभावी या भरोसेमंद बनाते हैं। लेकिन गतिविधि आधारित शिक्षा के पक्ष में दिए जाने वाले इन तर्कों से सहमति के बावजूद हमें लगता है कि गतिविधि आधारित शिक्षा की गंभीर सीमाएं हैं। गतिविधि आधारित शिक्षा, जिस रूप में इसकी क्रियान्विति तमिलनाडु में की जा रही है और जिसके आधार पर अन्य प्रदेशों में इसकी पैरवी की जा रही है, शिक्षा प्रक्रियाओं को पूर्णता के साथ संबोधित करने में असफल है। यह आधुनिक शिक्षा की ऐसी शब्दावली का इस्तेमाल करती है जिसे संदेह की नजर से देखना ही आपत्तिजनक लग सकता है। आधुनिक शिक्षा के इतिहास में तमाम शिक्षा दार्शनिकों और शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बहुत महत्त्व दिया है। जॉन डिवी परंपरागत शिक्षा व्यवस्था के विरोध में और प्रगतिशील शिक्षा के पक्ष में अनुभवाधारित शिक्षा पर जोर देते हैं। वायगोत्सकी और जेरोम ब्रूनर भी सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को सीखने के लिए महत्त्वपूर्ण कारक मानते हैं। रचनावाद (कन्सट्रक्टिविज्म) का पूरा आन्दोलन ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी की पैरवी करता है। लेकिन इस लेख में हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि तमाम आधुनिक शब्दावली के प्रयोग के बावजूद गतिविधि आधारित शिक्षा की व्यवहारिक समस्याएं क्या हैं ? इसकी अन्तर्निहित मान्यताएं क्या हैं ? इसके ज्ञानमीमांसा और सीखने के मनोविज्ञान में क्या समस्याएं हैं ? क्यों यह शिक्षा प्रक्रियाओं को पूर्णता से संबोधित करने में असफल है और शिक्षा जगत में इस विचार का आगमन किन दबावों के तहत हुआ है ?

सबसे पहले एक बड़ी और व्यवहारिक समस्या तो यह है, जो कि तमिलनाडु की अगुवाई में चल रहे गतिविधि आधारित शिक्षा कार्यक्रम में देखी जा सकती है, कि यह शिक्षण प्रक्रियाओं को एक खास तरह की यांत्रिकता में बांधता है। यदि तमिलनाडु के प्रयोग को देखें, जिसके बारे में उनका कहना है कि यह मॉडल उन्होंने ऋषिवैली के प्रयोग से लिया है, तो यह एक ऐसे व्यूह की रचना करता है जिसे भेदना सीखना अपने आप में बड़ा काम बन जाता है। यह सीखने की जटिल प्रक्रिया के समानान्तर सीखने की व्यवस्था की दुरूह प्रक्रिया खड़ी करता है। पहली बात तो इसमें शिक्षण सामग्री की भरमार है। तमिलनाडु के प्रयोग में प्रयुक्त सामग्री को देखें तो उसमें कार्डों, कार्डों पर विभिन्न प्रकार के संकेतों, माइलस्टोन, लेडर,

लोगो और मूल्यांकन के लिए चार्ट आदि के इस्तेमाल ने इसे बहुत ही जटिल बना दिया है। इसमें हर माइलस्टोन में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां रखी गईं है। इसमें विषय के परिचय के लिए गतिविधि, विषय वस्तु के पुनर्बलन के लिए गतिविधि, अभ्यास के लिए गतिविधि, मूल्यांकन के लिए गतिविधि और उपचारात्मक और सीखने को समृद्ध करने के लिए गतिविधियां हैं (हालांकि यहां यह भी ध्यान देने की बात है कि यह जटिल संरचना गतिविधि आधारित शिक्षा की चारित्रिक विशेषता हो यह जरूरी नहीं है। कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि गतिविधियों की इतनी जटिल व्यवस्था बनाए बिना भी गतिविधि आधारित शिक्षा संभव है)। अर्थात् सीखने के हर चरण पर गतिविधि है। गतिविधियों की इस रेखीय व्यवस्था और गतिविधियों के निश्चित पदानुक्रम में यह मान्यता निहित है कि इनसे गुजरने के बाद बच्चों का सीखना सुनिश्चित और प्रभावी हो जाएगा। यह मान्यता सीखने के मनोविज्ञान की नासमझी का एक परिणाम है। इसमें यह मान्यता भी निहित है कि बच्चों का सीखना एक निश्चित समय में सुस्पष्ट हो जाता है। जाने-माने शिक्षा मनोविज्ञानी जेरोम ब्रूनर यह बताते हैं कि सीखना एक रेखीय क्रम में नहीं चलता। सीखने की चुनौतियों को अलग-अलग समय पर संबोधित करना होता है। उनका मानना है कि अनेक बार बच्चे सीखने में छलांग लगाते हैं और जो कि सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा होती है। इसीलिए वे एक वर्तुल शिक्षाक्रम (स्पायरल करिक्युलम) की पैरवी करते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी अवधारणा को एक समय पर पूरी तरह से नहीं सीखा जा सकता। अतः शिक्षा प्रक्रियाओं में उसे अलग-अलग स्तर पर संबोधित किए जाने की जरूरत होती है। हमें लगता है कि रेखीय और निश्चित पदानुक्रम में गतिविधियों का रखा जाना बच्चों की सीखने की सहज प्रक्रियाओं को बाधित करेगा।

दूसरी समस्या यह है कि गतिविधि आधारित शिक्षा, इसीलिए यह शिक्षा की चुनौतियों को पूर्णता के साथ संबोधित कर पाने में असफल है, अपना ध्यान सिर्फ विषय शिक्षण (और वे भी भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन आदि ही, इसमें अन्य विषय क्षेत्र जैसे कि कला, संगीत और खेल आदि नहीं आते और यदि आते भी हैं या तो आनन्द के लिए या बच्चों को सक्रिय रखने के लिए) तक ही सीमित कर देती है। सामाजिक सरोकार के मसले, मूल्य, सामाजिक समता, संवेदनशीलता, जेण्डर संवेदनशीलता आदि ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें संबोधित करना शिक्षा का अपरिहार्य कार्य माना जाता है; उनके लिए शिक्षा प्रक्रियाओं में किसी तरह की गुंजाइश नहीं बचती। अतः हमें लगता है कि गतिविधि आधारित शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र और उद्देश्यों को बेहद संकरा करके देखती है। इस संदर्भ में गार्डनर की उक्ति सही लगती है, 'वह शिक्षा जो बच्चों की बुद्धिमता के विभिन्न क्षेत्रों को संबोधित नहीं करे वह बंजर किस्म का अनुभव होगी।'

गतिविधि आधारित शिक्षा की एक गंभीर समस्या इसके ज्ञानमीमांसीय आधार और दृष्टि में है। यह अपना आधार मूलतः दक्षता को बनाती है और गतिविधियों के लिए दक्षता को भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटने की बात करती है। एक अन्य समस्या दक्षता की परिभाषा और इसके ज्ञान, समझ और कौशलों से संबंध को लेकर है। दक्षता आधारित शिक्षा की आलोचना भारत में न्यूनतम अधिगम स्तर के संदर्भ में और इंगलैण्ड में व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ पर्याप्त हुई है। वास्तव में दक्षता आधारित शिक्षा के विचार का आगमन नवें दशक में इंगलैण्ड और अन्य अंग्रेजी भाषी देशों में व्यावासायिक शिक्षा के संदर्भ में हुआ जिसमें कि शिक्षक शिक्षा भी शामिल थी और धीरे-धीरे यह विचार स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश कर गया। दक्षता आधारित शिक्षा के विचार के आलोचकों का कहना कि दक्षता की कोई मान्य परिभाषा अभी तक संभव नहीं हो पाई है। उनका कहना है कि दक्षता की परिभाषा में यह स्पष्ट नहीं है कि यह एक वैयक्तिक गुण है, कर्म है या किसी व्यवहार का परिणाम। क्योंकि यह विचार व्यावसायिक शिक्षा से आया है अतः यह मूलतः व्यवसाय में प्रदर्शन से सरोकार रखता है। दक्षता आधारित शिक्षा का विचार प्रदर्शन एवं मापन योग्य व्यवहारों पर अत्यधिक जोर देता है। इसीलिए इसकी जड़ें व्यवहारवादी शिक्षाशास्त्र में निहित हैं। परिणामतः दक्षता का विचार मानवीय क्रियाकलापों को प्रदर्शन या मापन योग्य व्यवहारों में घटाकर देखने की कोशिश करता है। तमिलनाडु के प्रयोग के संदर्भ में वर्णित विभिन्न किस्म की गतिविधियों के वर्णन से यही लगता है कि वहां भी हर स्तर पर मापन पर जोर दिया गया है। परिणामस्वरूप दक्षता आधारित शिक्षा में जटिल मानवीय गतिविधियां या व्यवहार भी प्रदर्शन तक सीमित रह जाते हैं। हमें लगता है कि यह विचार ज्ञान एवं समझ की प्रकृति के विपरीत खड़ा है। समझ या ज्ञान की अवधारणा में ही यह निहित है कि ज्ञान और समझ अवधारणाओं के आपसी संबंध एवं सामंजस्य से उत्पन्न होता है और यह संबंध जितना ज्यादा गहरा और व्यापक होगा ज्ञान और समझ

भी उतने ही बेहतर रूप से विकसित हो पाएंगे। लेकिन दक्षता आधारित शिक्षा का प्राथमिक सरोकार सीखने और समझ के विकास से नहीं होकर प्रदर्शन पर केन्द्रित हो जाता है। अतः व्यवहारवादी सीखने को इतना घटाकर देखते हैं कि दक्षता आधारित शिक्षा में तोते और इंसान का फर्क भी गायब हो जाता है। यदि यह पूछने पर कि भारत की राजधानी क्या है ? कोई तोता यह बोल देता है कि 'दिल्ली' तो यह नहीं कहा जा सकता कि तोते को ज्ञान या समझ है। लेकिन व्यवहारवादी शायद कहें कि तोता ज्ञान या समझ रखता है। प्रदर्शन आधारित विधियां ज्ञान और समझ को इसी तरह प्रदर्शन तक सीमित कर देती हैं। दूसरे दक्षता आधारित शिक्षा में इस बात की भी अनदेखी की जाती है कि ज्ञान एवं समझ के होने और उसकी जांच किए जाने में भारी फर्क है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था की यह समस्या है कि वह न सिर्फ ज्ञान और समझ को बल्कि इसके परिणाम बतौर हर विषय को एक-दूसरे से इतना अलग करके देखती है कि विषय क्षेत्रों के बीच के परस्पर संबंध की संभावनाएं ही गायब हो जाती हैं। इसी चुनौती को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : 2005 संबोधित करती है और विषय क्षेत्रों के बीच एक सचेत आपसी संबंध स्थापित करने की पैरवी करती है।

टैरी हायलेण्ड दक्षता आधारित शिक्षा की आलोचना अवधारणात्मक अस्पष्टता और इसकी व्यवहारवादी बुनियाद के आधार पर करती हैं। उनका कहना है कि दक्षता का सरोकार 'व्यक्ति क्या जानता है' से ज्यादा इस बात पर होता है कि वह 'क्या कर सकता है'। दक्षता का विचार इस मान्यता पर आधारित है कि यदि कोई व्यक्ति किसी दक्षता का प्रदर्शन करता है तो वह ज्ञान या समझ को ग्रहण कर चुका है। लेकिन इसके विपरीत एक विचार यह भी है कि किसी गतिविधि को सक्षमता से प्रदर्शित कर पाने के लिए ज्ञान, समझ और कौशलों की जरूरत पूर्ववर्ती शर्त के रूप में होती है। साथ ही उनका कहना है कि यह प्रदर्शन के मानसिक और शारीरिक रूपों को पृथक कर देता है। हमें लगता है कि दक्षता आधारित शिक्षा में विश्लेषण, चिन्तन और पुनर्चिन्तन जैसी क्षमताओं के लिए किसी प्रकार का स्थान नहीं रहता और साथ ही इसमें अनुभव और ज्ञान के बीच का संबंध भी गलत समझ पर आधारित है। आमतौर पर यह माना जाता है कि हरेक अनुभव ज्ञान नहीं होता। अनुभव का ज्ञान में तब्दील होना, जैसा कि ऊपर कहा गया है, अनुभवों के बीच रिश्ते बनने से होता है। लेकिन गतिविधि आधारित शिक्षा अनुभव पर अतिशय जोर देने के चक्कर में सायास स्थापित किए जाने वाले इस रिश्ते को नकारती है।

दक्षता आधारित शिक्षा के बारे में टैरी हायलेण्ड की इस मान्यता से सहमत हुआ जा सकता है कि, 'दक्षता आधारित शिक्षा एक व्यापक राजनैतिक कार्यक्रम का हिस्सा है जो कि शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था का व्यावसायीकरण करती है और उदारवादी शिक्षा के मूल्यों को कमतर करके आंकती है।' हमें लगता है कि गतिविधि आधारित शिक्षा के पाठ्यचर्या निर्माण और शिक्षक शिक्षा, दोनों के ही संदर्भ में गंभीर परिणाम होंगे। गतिविधि आधारित शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या भी इसी प्रकार की बनाई जाएगी जिसमें कि उसे सिर्फ मापन योग्य और विषयवस्तु आधारित क्षेत्रों तक सीमित किया जाएगा। परिणामतः शिक्षक शिक्षा में भी परिप्रेक्ष्य निर्माण संबंधी मुद्दे गौण हो जाएंगे जो कि शैक्षिक प्रक्रियाओं को गहरे प्रभावित करते हैं।

गतिविधि आधारित या दक्षता आधारित शिक्षा एक ऐसे लोकप्रिय नारे के रूप में हमारे सामने आ रही है जो कि शिक्षा में सीखने की प्रक्रियाओं में बौद्धिक चिन्तन, समझ और ज्ञान के लिए खतरा है। हमें लगता है कि किसी भी अच्छे स्कूल का यह दायित्व होना चाहिए कि वह किसी एक तरह की विधा पर अत्यधिक जोर देने के बजाए विभिन्न प्रकार के अनुभवों और उनकी उपयुक्तता को स्थान दे और सीखने को एकीकृत अनुभव के रूप में स्थापित करे। ◆

विशंभर